महामत चोए मेहेबूबजी, तो पसाएं पसन।
अंखियूं नी आसा एतियूं, मूंजी रूहजी या रूहन।। १८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे लाड़ले धनी! अब आप ही दिखाओ तो देखें। हमारी या रूहों की आंखों की इतनी ही चाहना है।

।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। ७५ ।।

रे पिरीयम, मंगां सो लाड करे।
एहेडी किजकां मुदसे, खिलंदडी लगां गरे।। १ ।।

हे धनी! मैं आपसे मिलापकर, लाड़ करके मांगती हूं। मुझ पर कोई ऐसी मेहर करो कि मैं हंसती हुई आपके गले से आकर चिपट जाऊं।

तो मूंके चेओ तूं मूंहजी, हेडी करे निसबत।
धणी मूंहजे धामजा, आंऊं हांणे को हिन भत।। २ ।।

आपने मुझ से कहा कि तू मेरी अंगना है। हे मेरे धाम के धनी! तो फिर मेरी ऐसी हालत क्यों है?

एहेडो संग करे मूंहसे, अची डिंनिंए सांजाए।
इलम डिंनिंए बेसक जो, त आंऊं को बेठिस हीं पाए।। ३ ।।

मेरे से अपना ऐसा सम्बन्ध करके आपने अपने मुंह से अपनी पहचान कराई और अपना निःसन्देह ज्ञान दिया, तो अब इसे पाकर मैं बैठी कैसे रहूं?

इलम डिंने पांहिजो, जेमें सक न कांए।
डिंनिंए संग साहेबी, हित जाणजे कीं न सांजाए।। ४ ।।

आपने अपना ज्ञान दिया। जिसमें किसी तरह का संशय नहीं है। आपने अपनी साहिबी भी दी है। संसार में जिसकी किसी को पहचान नहीं है।

जे आंऊं चाहियां दिलमें, से को न करयो आंई हित।
कोठ्यो को न सुखनसे, जीं थिए न उसीडो हित।। ५ ।।

जो मैं दिल में चाहती हूं, उसे आप यहां क्यों पूरा नहीं करते? हमको सुख में घर क्यों नहीं बुलाते जिससे हमारी उदासी यहां न रह जाए।

मूंके केयज सुरखरू, से लखे भाइयां भाल।
रूहें कोठे अचां आं अडूं, जीं खिल्ली करियां गाल।। ६ ।।

मुझे आप अपने सामने बुलाओ तो आपके लाखों एहसान मानूंगी। रूहों को बुलाकर मैं आपकी तरफ आ जाऊंगी और हंसकर बातें करूंगी।

डिठम सुख सोणेमें, हिक आंझो तोहिजो आए।
मूंसे संग केइए हिन भूंअ में, जे डिए हित सांजाए।। ७ ।।

आपके सुखों को मैंने सपने में देखा। आपका ही एक भरोसा है। यदि आपने यहां अपनी पहचान दी है तो इस संसार में आकर मिलो।

Nijanand App

तूं धणी तूं कांध तूं, मूंजो तूं खसम।
ही मंगांथी लाडमें, जाणी मूर रसम।। ८ ।।

आप मेरे धनी हैं, पति हैं, खसम हैं। मूल घर की रसम जानकर आपसे लाड़ मांगती हूं।

कुछाइए त कुछांथी, माठ कराइए तूं।
को न पसांथी कितईं, मत्थे अभ तरे थी भूं।। ९ ।।

आप बुलवाते हो, तो बोलती हूं और चुप कराते हो तो चुप हो जाती हूं। यहां ऊपर आसमान, नीचे जमीन में कहीं कुछ दिखाई नहीं देता।

हे सभ तो सिखाइयूं, आंऊं मुराई अजाण।
जे कंने जे केइए, से सभ तूं हीं पाण।। १० ।।

यह तो आपने सिखाया है, मैं तो शुरू से ही अनजान थी। जो आपने किया या करते हो, सब आप ही करते हो।

घणुए भाइयां न कुछां, पण कुछाइए थो तूं।
इस्क रे कुछण कीं रहे, न डिंनी सबूरी मूं।। ११ ।।

मैं बहुत सोचती हूं कि कुछ न बोलूं, पर आप बुलवाते हैं। बिना इश्क के बोलें कैसे? यह सहूर आपने नहीं दिया।

पिरी मत्थें बेही करे, डेखारयाई हे ख्याल।
खिल्लण खसम रूहन मथां, पसी असांजा हाल।। १२ ।।

हे राजजी महाराज! आपने ऊपर बैठकर हमें यह खेल दिखाया है, ताकि हमारी हालत को देखकर हम रूहों के ऊपर हंस सको।

असीं हथ हुकम जे, तो केयूं फरामोस।
जीं नचाए तीं नचियूं, कीं करियूं रे होस।। १३ ।।

आपने ऐसी फरामोशी दी है कि हम आपके हुकम के अधीन बंध गए। अब आप जैसा नचाओ वैसा ही नाचें। बिना सावचेत (सतर्क) हुए हम कर भी क्या सकते हैं?

हुकम कर्‌यो था जेतरो, तीं फिरे असल अकल।
अकल फिराए सोणे के, तीं फिरे असांजा दिल।। १४ ।।

आप जितना हुकम करते हो, उतनी ही बुद्धि हमारी चलती है। संसार में भी हमारी बुद्धि को जितना घुमा देते हो, उतना हमारा दिल घूम जाता है।

पिरी पाण हित अची करे, बेसक डिंने इलम।
अर्स बका हिक हकजो, बेओ जरो न रे हुकम।। १५ ।।

हे धनी! आपने यहां आकर हमें जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया। जिससे हमें पता लगा कि अखण्ड परमधाम, आप तथा आपके हुकम के बिना यहां और कुछ नहीं है।

Nijanand App

लख गुणा डिए सिर पर, सो वराके ईं गाल।
असीं फरामोस तो हथमें, कौल फैल जे हाल।। १६ ।।

आप हमारे सिर पर लाखों दोष दो तो सौ बातों का एक ही उत्तर है कि हम आपके हाथों में फरामोशी में हैं, इसलिए हमारी कहनी, करनी और रहनी भी आपके हाथों में है।

तेहेकीक केयो तो इलमें, तो धारा न कोई बेसक।
अर्स रूहें असीं कदमों, कित जरो न तो रे हक।। १७ ।।

आपके इलम ने यह निश्चित कर दिया है कि आपके बिना और कोई है नहीं। हम परमधाम की रूहें आपके चरणों में हैं। हे धनी! आपके बिना कहीं कुछ नहीं है।

गुणा डिठम कई पांहिजा, से लाथा तोहिजे इलम।
कोए पाक न्हाए हिन दुनीमें, से असांके केयां खसम।। १८ ।।

मैंने अपने दोष देखे, परन्तु अब आपके इलम से सब समाप्त हो गए। इस दुनियां में माया से कोई पाक-साफ नहीं है। आपने ही हमको पाक-साफ कर दिया है।

आसमान जिमी जे विचमें, के चेयो न बका जो हरफ।
एहेडो कोए न थेयो, जे तो बका डेखारे तरफ।। १९ ।।

आसमान और जमीन के बीच में किसी ने अखण्ड घर परमधाम का एक अक्षर भी नहीं बताया। कोई ऐसा यहां नहीं हुआ है, जो आपके घर की पहचान बताए।

दुनियां हिन आलम में, कायम न डिठो के।
से सभ पाण पुकारियां, हिन चौडे तबके में।। २० ।।

इस संसार में किसी को अखण्ड घर नहीं मिला। ऐसा आपने स्वयं चौदह लोकों में पुकार-पुकार के कहा।

से कायम सभे थेयां, कूडा मोहोरा जे।
वडी वडाइयूं डिंनिए, असां हथ कराए।। २१ ।।

संसार के यह झूठे जीव और देवी-देवता अब सब अखण्ड हो गए। उनको अखण्ड बहिश्तों में हमारे हाथों से अखण्ड कर हमारी बड़ी महिमा गवाई।

कई खेल डेखारे रांद में, इलम डिंने बेसक।
भिस्त डियारी असां हथां, दुनियां चौडे तबक।। २२ ।।

संसार में हमें कई तरह के खेल दिखाए और वाणी भी निःसंदेह करने वाली दी। संसार को हमारे हाथ से बहिश्तें दिलवाईं।

डिंनिए वड्यूं वडाइयूं, हांणे जे डिए दीदार।
मिठा वैण सुणाइए वलहा, त सुख पसूं संसार।। २३ ।।

आपने हमें बड़ी बुजरकी (महानता) दिलाई है। अब केवल दर्शन और दे दो। मीठे वचन सुना दो। तो, हे धनी! संसार के सुख को देख सकूं।

Nijanand App

हे पण भूल असांहिजी, जे हिनमें मंगूं सुख।
बिओ डिसण वडो कुफर, गिंनी इलम बेसक।। २४ ।।

इसमें भी भूल हमारी ही है जो माया में सुख मांगती हूं। आपका बेशक जागृत बुद्धि का ज्ञान लेकर माया में सुख देखना दूसरा कुफ्र है।

खेल त जरो न्हाए कीं, ए इलमें खोली नजर।
हित बेही मंगूं सुख अर्सजा, धणी मिडन कोठे घर।। २५ ।।

यह खेल तो कुछ भी नहीं है। आपकी जागृत बुद्धि ने हमारी नजर खोल दी है। यहां बैठकर मैं परमधाम के सुख मांगती हूं, ताकि धनी घर में बुलाएं और मैं उनसे मिल सकूं।

ढील मंगूं घर हल्लणजी, बिओ खेल में मंगां सुख।
हिनमें अचे थो कुफर, आंऊं छडी न सगां रुख।। २६ ।।

घर चलने में भी देरी करना चाहती हूं। दूसरा खेल में सुख मांगती हूं। यह भी एक कुफ्र है कि मैं खेल को छोड़ना नहीं चाहती।

हिकडी गाल थेई हिन न्हाए में, असां न्हाए भारी थेयो।
त सुख मंगूं हित अर्सजा, जे न्हाए के पसूं था बेओ।। २७ ।।

इस झूठे संसार में एक ऐसी बात हो गई है कि यह झूठा संसार मुझे भारी पड़ गया, इसलिए यहां खेल में परमधाम के सुख मांगती हूं। नाचीज संसार को मैं दूसरा समझ बैठी हूं।

आंजी मंगाई मंगा थी, या कुफर या भूल।
हे डोरी आंजे हथ में, असां दिल अकल।। २८ ।।

आप मंगवाते हो, तो मांगती हूं। झूठ हो या भूल हो। हमारे दिल और अक्ल की डोरी आपके हाथ में है।

जे कीं डिसण बोलण, से तो रे सब बंधन।
हक इलम चोए पधरो, जे विचार करे मोमिन।। २९ ।।

जो कुछ देखती हूं या बोलती हूं, वह सब आपके बिना माया के फन्द ही हैं। आपकी जागृत बुद्धि का ज्ञान स्पष्ट कहता है कि मोमिन इस पर विचार कर लें।

धणी मूंहजे धामजा, असां न्हाए चोंणजी गाल।
असांजा आंजे हथ में, कौल फैल जे हाल।। ३० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे धाम के धनी! अब हमें कुछ कहने की बात नहीं रह गई। हमारी कहनी, करनी और रहनी सब आपके हाथ में है।

महामत चोए मेहेबूब जी, कर्‍यो जे अचे दिल।
जी जांणो तीं कर्‍यो, असां जी अकल।। ३१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे महबूब! अब जैसी आप के दिल में आवे, वैसी करो। जैसे आपको अच्छा लगे, वैसे हमारी बुद्धि को घुमाओ।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। १०६ ।।

Nijanand App